# हाथों से बातचीत

एक दोपहर जियुगाओ का स्टेशन की टिकट-खिड़की के पास तोत्तो-चान ने अपने से कुछ बड़ी उम्र के दो लड़कों और एक लड़की को खेलते देखा। देखने से लगता था मानो वे "पत्थर, कागज़, कैंची" खेल रहे हों। वे अपने हाथों से कुछ आकृतियाँ बना रहे थे। देखकर तोत्तो-चान को बड़ा मज़ा आया। ठीक से देख सकने के लिए वह कुछ पास चली गई। तब अचानक लगा कि मुँह से आवाज़ निकाले बिना ही वे आपस में बातें कर रहे हैं। पहले एक बच्चा अपने हाथों से तरह-तरह की मुद्राएँ बनाता, तब दूसरा कुछ दूसरी तरह की, उसके बाद तीसरा। और इसके बाद वे सब बिना आवाज़ किए ही ठठाकर हँस पड़ते। लगा तीनों को बड़ा मज़ा आ रहा है। कुछ देर देखते रहने के बाद वह इस नतीजे पर पहुँची कि वे आपस में अपने हाथों से बात कर रहे हैं।

"मैं भी अपने हाथों से बात कर सकती तो कितना मज़ा आता।" उसने कुछ ईर्ष्या के साथ सोचा। मन ही मन विचार किया कि वह उनके साथ खेले, पर हाथों से मुद्रा बनाकर कैसे पूछती वह? वे उसे डाँट भी सकते थे। वह चुपचाप पास खड़ी उन्हें देखती रही, जब तक कि वे वहाँ से तोयोको ट्रेन प्लेटफॉर्म की ओर चले न गए।

"मैं भी एक दिन अपने हाथों से लोगों के साथ बोलना सीखूँगी।" उसने तय किया।

सभी फोटोः आशा निकेतन उ. मा. बधिर विद्यालय, भोपाल के बच्चों के हैं।

तोत्तो-चान उस समय तक बहरे लोगों या उन बच्चों के बारे में जानती न थी, जो ओइमाची के गूँगे-बहरों के सरकारी स्कूल में पढ़ने जाते थे। ओइमाची उसी ट्रेन का आखिरी स्टेशन था जिससे वह रोज़ स्कूल जाया करती थी।

तोत्तो-चान के दिल को उस समय एक बात ने मोह लिया था। आँखों में चमक लिए वे बच्चे जिस उल्लास से एक दूसरे के हाथों से बनती मुद्राएँ देखते थे, वह उसे बेहद सुन्दर लगा था। उसकी इच्छा थी कि किसी दिन वह उन बच्चों से दोस्ती कर सके।

– यह अंश *तोत्तो-चान* से साभार